श्री राम स्तोत्र : shree raam stotr

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणम् ।

नव कंज लोचन कंच मुख कर कंज पद कंजारुणम् ।

कंन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरम् ।

पटपीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम् ।

भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनम् ।

रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल चन्द दशरथ नन्दनम् ।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम् ।

आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खर दूषणम् ।

इति वदित तुलसीदास शंकर

शेष मुनि मन रंजनम् ।

मन हृदय कंज निवास कुरु

कामादि खल-दल-गंजनम् ।

मन जाहि राच्यो मिलहि

सो वर सहज सुन्दर सांवरो ।

करुणा निधान सुजान शील स्नेह जानत रावरो ।

यहि भांति असीस सुन सिय सहित हिय हरषित अली ।

तुलसी भवनिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ।

सभी आरती के पीडीएफ कहीं भी डाउनलोड

atozpe.in